



RVUNL

कनिष्ठ लेखाकार (Junior  
Accountant)

राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड (RVUNL)

भाग - 1

लेखांकन

# विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	लागत लेखांकन	1
2	वित्तीय प्रबंधन	34
3	कराधान	71
4	कंपनी	120
5	साझेदारी परिचय	183
6	अंकेक्षण	202
7	ऑकड़ों का संग्रहण एवं प्रस्तुतीकरण	240

# 1

## CHAPTER

# लागत लेखांकन

### Cost Accounting - An Introduction

- प्रथम विश्व युद्ध के बाद 1929 में आयी विश्वव्यापी मंदी के बाद उत्पादकों ने यह महसूस किया कि प्रतिस्पर्धा का सामना लागत पर नियंत्रण करके ही किया जा सकता है
- भारत में लागत लेखांकन का विकास करने के लिए ICWA की स्थापना सन् 1944 में गारंटी द्वारा सीमित कम्पनी के रूप में हुई, जो लागत लेखों का विकास करने तथा इससे संबंधित परिश्रादनों का आयोजन करवाता है
- 1959 में cost and works Account act. बनाया गया 2013 में इस संख्या का नाम बदलकर ICAI कर दिया गया।
- 1955 में सरकार ने कम्पनी अधिनियम में संशोधन करके कुछ विशेष-प्रकार की कंपनियों के लिए लागत लेखे रखना अनिवार्य कर दिया कम्पनी अधिनियम 2013 के अनुसार - " 66 यदि एक कम्पनी इस प्रकार की कम्पनी की कम्पनी है जो कि उत्पादन सम्बंधी प्रक्रिया सम्बंधी निर्माण सम्बन्धी या खनन सम्बंधी कार्यों में सलग्न है तो उसे ऐसी सूचनाएँ तथा लेखे रखने होंगे जो की सामग्री प्रयोग श्रम प्रयोग या लागत के अन्य तत्वों के प्रयोग से सम्बंधित है।"

### लागत लेखांकन सम्बन्धित शब्द

- (1) **लागत या परिव्यय: (Cost)** सामान्य लागत का अर्थ त्याग से है जिसे मुद्रा में व्यक्त किया जा सके। इस शब्द का प्रयोग हमेशा सन्दर्भ में किया जाता है, जैसे – सामग्री लागत, श्रम लागत तथा ऊपरी व्यय लागत।  
"लागत से आशय व्यय (वास्तविक अथवा काल्पनिक) की उस राशि से है जो किसी विशेष वस्तु या सेवा को प्राप्त करने में लगती है।"  
— C.I.S.A इंग्लैण्ड
- (2) **लागत निर्धारण :- (Costing)** लागत ज्ञात करने की प्रक्रिया या क्रियाविधि को लागत निर्धारण कहा जाता है। लागत निर्धारण की तकनीक व्यवसाय की प्रकृति पर निर्भर करती है।
- (3) **लागत लेखांकन :- (Cost Accounting)** वैज्ञानिक आधार पर लागत ज्ञात करने के लिए विधिवत स्थापित की गई लिखित प्रक्रिया को लागत लेखांकन कहा जाता है।  
लागत लेखांकन से आशय उस प्रक्रिया से है जो व्यय के होने से लेकर उसे लागत केन्द्रों या लागत इकाइयों से सम्बन्धित करने तक चलती है।

### लागत लेखाशास्त्र: (Cost Accountancy)

- लागत निर्धारण
- लागत लेखांकन
- लागत नियंत्रण
- लागत अंकेक्षण

### Nature of Cost Accounting

- लागत लेखांकन की प्रकृति विज्ञान व कला दोनों ही है। इसके अतिरिक्त इसे व्यवहार भी माना गया है।
- **C.I.A.M England के अनुसार :-**
  - ✓ "लागत लेखाशास्त्र, लागत लेखापाल का विज्ञान, कला व व्यवहार है।"
  - ✓ इसके कुछ निश्चित सिद्धांत हैं तथा यह व्यवस्थित ज्ञान का समुद्र होने के कारण यह **विज्ञान** है, तथा इन सिद्धांतों का उपयोग लेखापाल के चातुर्थ पर निर्भर करता है, इस कारण यह **कला** भी है।
  - ✓ "लागत लेखाशास्त्र **व्यवहार** है क्योंकि लागत लेखापाल को अपने कार्य में निपुणता लाने हेतु सतत् प्रयास करने होते हैं।"

### लागत लेखांकन के उद्देश्य :-

- लागत निर्धारण
- लागत नियंत्रण
- लागत न्यूनीकरण
- लागत विवरण का आधार

(v) विक्रय मूल्य का निर्धारण करना (vi) नीति निर्धारण का आधार

(vii) वैधानिक आवश्यकताओं की अनुपालना।

- ✓ वित्तीय एवं लागत लेखांकन में परस्पर संबंध एवं सापेक्षित महत्व
  - ✓ दोनों लेखांकन विधियों में घनिष्ठ संबंध है। ये एक-दूसरे की प्रतिस्पर्धी नहीं होकर पूरक होती हैं।
  - ✓ किसी व्यवसाय में दोनों एक साथ काम में ली जा सकती हैं। दोनों में दोहरा लेखा प्रणाली के सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है।
- “वित्तीय लेखांकन का उद्देश्य संस्था की आर्थिक स्थिति का पता लगाना है, जबकि लागत लेखांकन का उद्देश्य व्ययों पर नियंत्रण रखकर लागत ज्ञात करना है”

**जैसे:-** एक कम्पनी AB व C तीन वस्तुओं का उत्पादन करती है :

Particulars	Financial Accounting (A + B + C)	Cost Account A	B	C
Sales	10,000	5,000	3,000	2,000
Less: Cost	7,000	3,000	1,500	2,500
Profit	3,000	2,000	1,500	-500
% Profit on Sales	30%	40%	50%	-25%

**उदाहरण :-**

उदाहरण से स्पष्ट है कि वित्तीय लेखांकन में केवल आर्थिक ढाँचे का मोटे तौर पर अध्ययन किया जाता है, जबकि लागत लेखांकन में प्रत्येक व्यय का विश्लेषण किया जाता है।

**लागत लेखांकन के महत्व / लाभ :-**

- (i) प्रबंधकों को लाभ
- (ii) कर्मचारियों को लाभ
- (iii) सरकार को लाभ
- (iv) विनियोजकों को लाभ
- (v) उपभोक्ताओं को लाभ

**लागत की अवधारणाएँ :-**

**Cost Concepts**

लागतों के विभिन्न स्वरूप को ही लागतों की अवधारणा कहा जाता है।

(ii) **संबंधित लागत या प्रासंगिक लागत :-**

ऐसी लागत जो परिवर्तनशील होती है तथा जिसका सीधा संबंध उत्पादित वस्तु से है। यह लागत वस्तु से संबंधित भावी निर्णयों को प्रभावित करती है।

(iii) **असंबंधित लागतें या डूबी हुई लागतें :-**

यह संस्था की स्थायी संपत्तियों में विनियोग की गई ऐसी लागत है जो भावी निर्णयों को प्रभावित नहीं करती।

**जैसे :-** पुराने प्लांट को बेचने से हुई हानि डूबी हुई लागत है।

(iii) **अवसर लागत :-**

यदि उत्पादन के किसी साधन का वैकल्पिक उपयोग संभव हो तो उसी साधन का अन्य उपयोग करने पर जो आय प्राप्त हो सकती है, वह उसकी अवसर लागत कहलाती है।

**4. आरोपित लागत (Imputed cost)**

इन्हें घरेलू लागत या मानी गई लागत भी कहा जाता है। यह लागतें वास्तविक नहीं होती, परंतु सही निर्णय के लिए इनको शामिल किया जाता है।

**जैसे :-** स्वयं की दुकान का किराया।

## 5. नकद लागतें (Pocket cost)

जिन लागतों का भुगतान नकद में किया जाता है, वे नकद लागतें कहलाती हैं। इसमें ह्रास को शामिल नहीं किया जाता है।

## 6. रूपांतरण लागतें (Conversion cost)

प्रति इकाई लागत में से प्रत्यक्ष सामग्री लागत को घटाने के बाद बची शेष लागत रूपांतरण लागत कहलाती है। जब प्रत्यक्ष सामग्री लागत तेजी से बढ़ रही हो, तो रूपांतरण लागत द्वारा ही लागत नियंत्रण किया जा सकता है।

## 7. कामबंदी लागत (Shut-down cost)

## 8. भेदात्मक लागत (Differential cost)

दो भिन्न-भिन्न उत्पादन स्तरों पर लागत में जो अंतर आता है, वह भेदात्मक लागत कहलाता है।

## 9. अवधि लागत (Period cost)

अवधि लागतों का संबंध स्थिर लागतों से है क्योंकि इनका संबंध एक निश्चित अवधि से होता है।

## लागत इकाई (Cost Unit)

प्रत्येक प्रकार के उद्योगों में लागतों को व्यक्त करने हेतु भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रति इकाई लागतों का प्रयोग किया जाता है।

"लागत इकाई" से तात्पर्य उत्पादन, सेवा अथवा समय की उस इकाई से है जिसके सम्बन्ध में लागत ज्ञात की जाती है वह अभिव्यक्त की जाती है।

विभिन्न व्यवसायों में लागत ज्ञात करने की इकाई लागत अलग-अलग होती है, जैसे:

- ईट भट्टा – प्रति 1000 ईटें
- चीनी कम्पनी – प्रति क्विंटल
- साइकिल उद्योग – प्रति साइकिल
- बैंक – प्रति विभाग

## लागत केन्द्र (Cost Center):

वह केन्द्र जिसके सम्बन्ध में लागत आँकड़े एकत्र किए जाते हैं तथा लागत नियंत्रण किया जाता है, लागत केन्द्र कहलाते हैं। प्रत्येक लागत केन्द्र की लागत का विश्लेषण किया जाता है तथा लागत नियंत्रण के उपाय किए जाते हैं।

जैसे :-

ईट भट्टे उद्योग में लागत का मापन प्रति 1000 ईटों का किया जाता है; इनमें ही लागत को अभिव्यक्त किया जाता है – यह तो है लागत इकाई तथा ईट उत्पादन पर लागत के आंकड़ों हेतु निम्न केंद्रों का निर्धारण किया गया है:

1. कच्ची मिट्टी
2. कच्ची ईट थापना
3. ईटों को पकाना
4. पक्की ईटों को निकालना व वर्गीकरण

## लागत केन्द्र के प्रकार

1. व्यक्तिगत लागत केन्द्र
2. अव्यक्तिगत लागत केन्द्र
3. परिचालन लागत केन्द्र

## लागत के तत्व (Elements of Cost)

"लागत से आशय खर्चों की उस राशि से है (काल्पनिक या वास्तविक) जो किसी वस्तु विशेष पर व्यय की जाती है अथवा उससे सम्बद्ध की जाती है।"

## लागत के तत्व:

तत्व से आशय किसी वस्तु के अंग या उसके भाग से है। लागत लेखांकन में लागतों को विभिन्न भागों में बाँटकर अध्ययन किया जाता है।

## मुख्य रूप से लागत के तीन तत्व हैं:

- (i) सामग्री (Material)
- (ii) श्रम (Labour)
- (iii) उपरिव्यय (Overhead)

### (i) सामग्री (Material):

सामग्री से आशय उन पदार्थों से जिसका प्रयोग किसी उपयोग में किसी वस्तु के उत्पादन में किया जाता है।

**जैसे:** शक्कर उत्पादन में गन्ना, टायर उत्पादन में रबर सामग्री लागत को दो भागों में बाँटा गया है:

- ✓ प्रत्यक्ष सामग्री (Direct Material)
- ✓ अप्रत्यक्ष सामग्री (Indirect Material)

### प्रत्यक्ष सामग्री (Direct Material):

प्रत्यक्ष सामग्री लागत से तात्पर्य उत्पादन में प्रयुक्त उस मुख्य सामग्री से है जो उत्पादन का अंग बन जाती है। इस सामग्री को उत्पादन केन्द्रों व उत्पादन इकाई से सीधा संबंधित किया जा सकता है।

**जैसे:**

कॉपी उद्योग में कागज प्रत्यक्ष सामग्री है जो कॉपी का अंग बनता है, परन्तु कॉपियों की पैकिंग में काम में लिया जाने वाला कागज अप्रत्यक्ष सामग्री है।

### प्रत्यक्ष सामग्री लागत की विशेषताएँ

- (i) प्रत्यक्ष सामग्री उत्पादित वस्तु विशेष का अभिन्न अंग होती है।
- (ii) प्रत्यक्ष सामग्री का मूल्य अन्य सामग्री की तुलना में ज्यादा होता है।
- (iii) ऐसी सामग्री उत्पादन बढ़ने के साथ-साथ उसी अनुपात में बढ़ती है।
- (iv) यदि किसी सामग्री की प्रकृति ऐसी है कि उसे बिना प्राथमिक पैकिंग के नहीं बेचा जा सकता, तो प्राथमिक पैकिंग की लागत भी प्रत्यक्ष लागत होगी। **जैसे:** कोलगेट।

### अप्रत्यक्ष सामग्री (Indirect Material):

ऐसी सामग्री जो उत्पादन में कम मात्रा में प्रयुक्त होती है तथा जो उत्पादित इकाई का हिस्सा नहीं बनती।

**जैसे:** कार्यालय की स्टेशनरी, मशीनों का तेल, रद्दी कपड़ा, पैकिंग आदि।

### श्रम (Labour) या मजदूरी (Wages):

लागत लेखांकन में मजदूरी से तात्पर्य कर्मचारियों को दिए जाने वाले पारिश्रमिक से है।

इसमें वेतन, बोनस, कमीशन, मजदूरी सभी शामिल हैं।

### प्रत्यक्ष श्रम लागत:

प्रत्यक्ष श्रम लागत से तात्पर्य ऐसी श्रम लागत से है जिसको किसी लागत केन्द्र या लागत इकाई से सरलता से संबंध किया जा सके।

जब श्रमिकों को कार्यानुसार मजदूरी प्रदान की जाती है तो वह प्रत्यक्ष मजदूरी लागत होगी।

जब समयानुसार मजदूरी प्रदान की जाती है, तो तभी प्रत्यक्ष लागत होगी जब उस मजदूरी का सीधा सम्बन्ध उत्पादन केन्द्र या उत्पादन इकाई से हो सके।

**जैसे:** "प्रबन्धक का वेतन (समयानुसार) अप्रत्यक्ष है क्योंकि इनके कार्यों का सम्बन्ध किसी एक लागत केन्द्र से नहीं है।"

"प्रत्यक्ष श्रम लागत से आशय उस श्रम लागत से है जिसका सम्बन्ध पूर्णतया किसी निश्चित वस्तु, उपकार्य, या प्रक्रिया या लागत केन्द्र व लागत इकाई से जोड़ा जा सकता है।"

**अप्रत्यक्ष श्रम लागत:** प्रत्यक्ष श्रम लागत के विपरीत।

**व्यय (Expenses):** सामग्री व श्रम के अतिरिक्त लागत का तीसरा तत्व व्यय कहलाता है।

इसमें मशीन व अन्य सम्पत्तियों पर हास, विद्युत व्यय, किराया आदि व्यय में मानी गई लागत को भी शामिल किया जाता है।

**जैसे:**

- स्वयं की सम्पत्ति का किराया
- स्वयं की पूँजी पर ब्याज

### प्रत्यक्ष व्यय:

प्रत्यक्ष सामग्री, प्रत्यक्ष श्रम के अतिरिक्त ऐसे व्यय जो लागत केन्द्र तथा लागत इकाई से सीधे संबंधित किए जा सकते हैं, प्रत्यक्ष व्यय कहलाते हैं।

**जैसे:**

- (i) किसी विशेष वस्तु का निर्माण करने हेतु मंगाए गये उपकरण का किराया।

- 
- (ii) विशेष वस्तु के उत्पादन में लगी मशीनों का हास, किराया, मरम्मत  
(iii) किसी विशेष वस्तु के उत्पादन हेतु किये गये शोध व्यय, डिज़ाइन, सांचे, चुकाई गई रॉयल्टी  
(iv) किसी विशेष वस्तु के निर्माण हेतु किए गए व्यय

**अप्रत्यक्ष व्यय:** प्रत्यक्ष के बिल्कुल विपरीत

**मूल लागत (Prime Cost) =** Direct Material + Direct Labour + Direct Overheads

**उपरिव्यय (Overheads):**

Indirect Material + Indirect Labour + Indirect Expenses

उपरिव्यय को भी तीन भागों में बाँटा गया है:

1. Factory Overheads
2. Adv Office Overheads
3. Selling and Distribution Overheads

**कारखाना उपरिव्यय (Factory Overheads):**

कारखाने में किसी उत्पादन में लगाई गई अप्रत्यक्ष सामग्री, अप्रत्यक्ष श्रम व अप्रत्यक्ष व्यय।

**इसके अन्य नाम:**

- Manufacturing Overheads
- Production Overheads
- Factory On Cost
- Factory Loading

**कार्यालय उपरिव्यय:**

कार्यालय से संबंधित अप्रत्यक्ष सामग्री, अप्रत्यक्ष श्रम व अप्रत्यक्ष व्यय

**विक्रय व वितरण उपरिव्यय:**

"विक्रय उपरिव्यय विक्रय बढ़ाने तथा ग्राहकों को बनाए रखने के लिए किए गए व्यय की लागत है"

"वितरण उपरिव्यय ग्राहक से माल का आदेश प्राप्त होने पर उसे पैकिंग कर ग्राहक तक पहुँचाने में किया गया व्यय"

**Factory Overheads:**

- Power
- Indirect Wages
- Machine Repairs
- Rent and Rates
- Depreciation on Machine
- Lighting
- Drawing Office Expenses
- Factory Heat, Water, Power Expenses
- Depreciation of Plant
- Depreciation of Machine
- Wages
- Factory Supervision

**Office Overheads:**

- Office Rent
- Lighting (Office)
- Auditing Fee
- Postage and Stationery
- Bank Charges

- Director Fee
- Legal Expenses
- Office Staff Salaries

**Partwise Total Overheads:**

- Selling and Distribution Expenses
- Market Research Expenses
- Bad Debts
- Free Samples
- Salaries of Salesmen
- Commission to Salesmen
- Travelling Expenses
- House Expenses
- House Rent
- Upkeep of Delivery Van
- Advertisement Expenses
- Sales Promotion Expenses
- Heat, Light and Power (Selling Related)

**Prime Cost:** Direct Material + Direct Labour + Direct Expenses

**Works Cost:** Prime Cost + Factory Overheads

**Cost of Production:** Works Cost + Office Overheads

**Cost of Goods Sold:** Cost of Production + Opening Stock of Finished Goods – Closing Stock of Finished Goods

**Total Cost of Sales:** Cost of Finished Goods + Selling and Distribution Overheads

**प्रारम्भिक व अंतिम स्टॉक का समायोजन**

1. **Stock of Raw Material:** Opening Stock of Raw Material + Purchase – Closing Stock of Raw Material

**अर्द्ध-निर्मित माल के स्टॉक का समायोजन**

वित्तीय वर्ष के अन्त में कुछ माल प्रक्रिया में रह जाता है, जिसमें कुछ काम हो चुका होता है तथा कुछ शेष रह जाता है। इसके समायोजन की तीन परिस्थितियाँ हैं:

1. अगर WIP का मूल्यांकन मूल लागत पर किया जाना है, तो:

**Prime Cost = Prime Cost + Opening Stock of WIP – Closing of production Stock of WIP**

(ii) अगर wip का मूल्यांकन कारखाना लागत पर किया जाये

works cost = warks cost + opening stock of wip - closing stock of wip

(iii) यदि wip में प्रत्यक्ष श्रम, प्रत्यक्ष सामग्री और कारखाना उपरिव्यय की राशि अलग-अलग ज्ञात हो तो इससे सम्बंधित opening stock व closing stock का समायोजन इनके साथ अलग- अलग कर दिया जायेगा

**Cost Sheet**

Particulars	Amount (₹)
<b>Material Purchased</b>	XXX
Add: Freight on Material	XX
Less: Purchased Returns	XXX

<b>Net Purchased</b>	XX
Add: Opening Stock of Raw Material	XX
Less: Closing Stock of Raw Material	(XX)
<b>Direct Material</b>	XXX
<b>Direct Labour</b>	XXX
<b>Prime Cost</b>	XXX
Add: Factory Overheads	XXX
Add: Opening Stock of Work-in-Progress (WIP)	XXX
Less: Closing Stock of Work-in-Progress (WIP)	(XXX)
<b>Works Cost</b>	XXX
Add: Office Overheads (Production Cost)	XXX
Add: Opening Stock of Finished Goods	XXX
Less: Closing Stock of Finished Goods	(XXX)
<b>Cost of Goods Sold</b>	XXX
selling and distribution overheads	XXX
Cost of sales	XXXX
profit (Balance tingure)	
Sales	

## सामग्री लागत नियंत्रण (Material Cost Control)

### Material सामग्री

इसमें केवल कच्ची सामग्री को ही शामिल किया जाता है।

### Stock स्टॉक

इसमें निर्मित माल, अर्ध-निर्मित माल, दूषित माल, खराब माल — सबको शामिल किया जाता है।

### Inventory इन्वेन्टरी

इसमें सामग्री, स्टॉक, मशीनों के कलपुर्जे, माल को निर्मित बनाने के उपकरण शामिल किए जाते हैं।

इन्वेन्टरी विस्तृत अवधारणा है, जिसमें सामग्री व स्टॉक दोनों को शामिल किया जाता है।

### सामग्री नियंत्रण के उद्देश्य

- आवश्यक सामग्री का सही पूर्वानुमान
- उचित मूल्य पर क्रय
- सामग्री प्राप्ति की जाँच
- संतुलित भंडारण
- सामग्री के श्रृंखला व गबन पर रोक
- सूचनाएं उपलब्ध करवाना
- कार्यशील पूँजी का उचित प्रयोग
- उत्पादन लागतों में कमी
- उत्तरदायित्व निर्धारण

### सामग्री नियंत्रण तकनीक :-

#### स्टॉक स्तर निर्धारित करना

भण्डार में सामग्री के संग्रहण हेतु विभिन्न स्तर निर्धारित कर दिए जाते हैं ताकि सही समय पर, सही लागत पर, सही सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके। जो निम्न हैं :-

## Re-order Stock Level :-

(i) **सामग्री का पुनः आदेश स्तर :-** भण्डार में इस स्तर पर सामग्री के पहुँचते ही सामग्री के इस क्रम का आदेश दे देना चाहिए, ताकि किसी भी परिस्थिति में सामग्री प्राप्त होने तक उत्पादन कार्य निरंतर चलता रहे। यह स्तर उपयोग को सुरक्षा प्रदान करता है।

$$\text{Re-order Stock Level} = \text{Maximum time to get supply} \times \text{Maximum rate of consumption}$$

(ii) **सामग्री का न्यूनतम स्टॉक स्तर :- (Minimum Stock Level)**

यह स्टॉक का वह स्तर है, जिससे कम मात्रा में सामान्य परिस्थितियों में सामग्री नहीं होनी चाहिए, वरना उत्पादन का प्रवाह टूट जाएगा।

$$\text{Minimum Stock Level} = \text{Reorder stock level} - (\text{Average time to get supply} \times \text{Average consumption})$$

(iii) **सामग्री का सुरक्षित स्टॉक स्तर (Safety Stock Level of Material)**

सामान्य Re-order Level ही सुरक्षित स्टॉक स्तर होगा, परन्तु अन्य सूत्र =

$$\text{Average time to get supply} \times \text{Average consumption rate}$$

(iv) **सामग्री का अधिकतम स्टॉक स्तर (Maximum Stock Level of Material)**

यह वह स्तर है जिससे ज्यादा सामग्री सामान्य परिस्थितियों में स्टॉक में नहीं रखी जाएगी। इसका निर्धारण कई परिस्थितियों पर निर्भर करता है जैसे- सरकारी नियम, गोदाम की क्षमता, सामग्री की उपलब्धता।

स्टोर में पुनः आदेश देते समय कुछ मात्रा स्टॉक में रहती है जिसे **Re-order Level** कहते हैं तथा पुनः आदेश एक निश्चित मात्रा का दिया जाता है, उसे **EOQ** कहा जाता है।

अब अगर जिस दिन आदेश दिया जाए, उसी दिन माल प्राप्त हो जाए तो-

**Maximum Level = EOQ + Reorder Level**

लेकिन व्यवहार में ऐसा नहीं है। Reorder प्राप्त होने में न्यूनतम समय तो लगता है, अतः उसे घटा दिया जाएगा:

$$\text{Maximum Level} = \text{EOQ} + \text{Reorder Level} - (\text{Min Consumption})$$

(v) **सामग्री का औसत स्टॉक स्तर (Average Stock Level)**

$$= \frac{1}{2} (\text{Minimum Stock Level} + \text{Maximum Stock Level})$$

(vi) **सामग्री का व्यय स्टॉक स्तर :-**

इस स्तर पर तुरन्त सामग्री नहीं मंगवाई तो उत्पादन कार्य रुक जायेगा।

$$\text{Danger Stock Level} = \text{Minimum time to get emergency supply} \times \text{Minimum rate of consumption}$$

**आर्थिक आदेश मात्रा का निर्धारण (EOQ) :-**

जब स्टॉक पुनः आदेश स्तर तक आ जाता है तो अब यह समस्या हो जाती है कि पुनः आदेश कितनी मात्रा का दिया जाये। अतः आदेश ऐसी मात्रा में दिया जाये ताकि भण्डारण लागत न्यूनतम हो। भण्डारण लागतें निम्न हैं:

(1) **Ordering Cost** (आदेश लागत)

(2) **Carrying Cost** (सामग्री रखने की लागत)

EOQ वह मात्रा है जहाँ  $O = C$  हो।

$$EOQ = \sqrt{\frac{2UO}{C}}$$

U = Annual Usage

C = Carrying Cost

O = Ordering Cost

Q. of Eoq pirm this Date

➤ Annual Usage = 1600 Units

➤ Ordering Cost per order = ₹60

➤ Insurance, Rate and Tax per unit = ₹1.20

$$Eoq = \sqrt{\frac{2UO}{C}}$$

$$Eoq = \sqrt{\frac{2 \times 1600 \times 60}{1.20}} = 400 \text{ unit}$$

**क्रय बढ़ा प्राप्त करने की दशा में EOQ का निर्धारण:**

यदि एक साथ क्रय करने पर बढ़ा प्रदान किया जाता है, तो EOQ के बिना तथा EOQ के साथ दोनों स्थितियों में लागत का निर्धारण किया जाना चाहिए, उसके बाद निर्णय लिया जाना चाहिए।

Q. 1000 इकाइयों के एक साथ क्रय करने पर आदेश लागत - 500

₹10 मूल्य पर 5% Discount

Carrying cost @ 40%

**If Eoq system Not followed :-**

Material Purchase Cost = 1000 @ ₹9.5

Ordering Cost

Carrying Cost =  $(1000 \div 2) \times 3.8$  (WN-1)

**WN-1:-** भण्डारण लागत औसत स्टॉक स्तर पर ज्ञात की जाती है।  $₹9.5 \times 40\% = ₹3.8$

**If Eoq system is followed :-**

$$Eoq = \sqrt{\frac{2UO}{C}} = \sqrt{\frac{2 \times 1000 \times 500}{4}} = 500 \text{ unit}$$

Material Cost =  $1000 \times ₹10 = ₹10,000$

Ordering Cost =  $₹500 \times 2 = ₹1000$

Carrying Cost =  $(500 \div 2) \times ₹4 = ₹1000$

**₹12,000**

Eoq system Not followed is profit b/c

सामग्री आवर्त अधिक होने पर कम पूंजी की आवश्यकता होगी।

**सामग्री आवर्त अनुपात (Material Turnover Ratio):**

एक निश्चित अवधि में उपयोग की गई मात्रा तथा उस अवधि में स्टॉक में उपलब्ध सामग्री की मात्रा के अनुपात सामग्री आवर्त अनुपात कहा जाता है।

$$MTR = \frac{\text{Material Consumed in Fixed Time}}{\text{Average Stock in}}$$

$$\text{सामग्री आवर्त (समय) [MTR (Time)]} = \frac{365/12}{MTR}$$

**सामग्री नियंत्रण की A, B, C तकनीक**

Material	Price
A – 10-15%	70-80%
B – 20-30%	20-30%
C – 50-70%	10-15%

**सामग्री नियंत्रण मूल्य के आधार पर किया जाता है।**

- स्टॉक की भौतिक जाँच
  - ✓ अवधि अंतराल गणना
  - ✓ निरंतर सामग्री जाँच

**सामग्री का FSND वर्गीकरण:** इसमें सामग्री को निम्न भागों में बाँटकर वर्गीकरण किया जाता है:

---

**F** – Fast Turnover

**S** – Slow Turnover

**N** – Normal Turnover

**D** – Dormant Turnover (अप्रचलित)

इन पर ध्यान देने की ज्यादा आवश्यकता है।

### पुर्जे का VED वर्गीकरण:

इस विधि द्वारा मशीनी पुर्जों का वर्गीकरण किया जाता है:

**V = Vital** – महत्वपूर्ण पुर्जे, जिनके बिना उत्पादन सम्भव नहीं।

**E = Essential** – उत्पादन तो सम्भव है, परन्तु नुकसान होगा।

**D = Desirable** – उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं।

**JIT (Just in Time) विचारधारा:** इस विचारधारा में स्टॉक के स्तर को शून्य तक लाने का प्रयास किया जाता है, अर्थात तुरंत कच्चा माल तुरन्त उत्पादन यह पद्धति जापान में अपनाई जाती है।

### सामग्री का मूल्यांकन एवं निर्गमन:-

#### (Valuation and Issue of Material)

#### Organisation of Material Control सामग्री नियंत्रण का संगठन

- **Purchase Department** – क्रय विभाग
- **Receipt Department** – प्राप्ति विभाग
- **Store Department** – भण्डारण विभाग
- **Cost Account Department** – लागत लेखा विभाग
- **Audit Department** – अंकेक्षण विभाग

#### Procedure or Steps of Material Control

#### सामग्री नियंत्रण प्रक्रिया:-

- सामग्री की किस्म का निर्धारण
- सामग्री का वर्गीकरण एवं संकेतांक का निर्धारण
  - ✓ संख्यात्मक
  - ✓ शाब्दिक
  - ✓ सामुद्रिक
- भण्डारण का स्थान तथा नक्शा निर्धारण करना
- सामग्री क्रम
- सामग्री जाँच
- सामग्री की वापसी
- सामग्री का भण्डारण
- सामग्री के स्तरों का निर्धारण
- सामग्री की प्राप्ति एवं निर्गमन का लेखा करना
  1. बिन कार्ड में सामग्री की प्रविष्टि
  2. स्टोर कार्ड
  3. दो बिन का प्रयोग

#### सामग्री निर्गमन का लागत विभाग द्वारा लेखा :-

- लागत लेखा विभाग में प्रत्येक प्रकार की सामग्री के लिए एक अलग से खाता बही होती है जिसमें प्रत्येक प्रकार की सामग्री के लिए मात्रा तथा मूल्य दोनों का लेखा एक साथ किया जाता है।
- निश्चित अवधि के बाद सामग्री के शेष का भौतिक सत्यापन किया जाता है। सामग्री के हास, श्रेय आदि का लेखा भी इसी बही में किया जाता है।

➤ अलग-अलग समय पर प्राप्त सामग्री का मूल्य अगर समान नहीं है तो सामग्री के निर्गमन का मूल्यांकन किन दरों पर किया जाए, यह प्रमुख समस्या उत्पन्न हो जाती है। इसकी निम्न विधियाँ हैं:

- ✓ वास्तविक मूल्य के आधार पर सामग्री मूल्य का निर्धारण
- ✓ औसत मूल्य के आधार पर सामग्री मूल्य का निर्धारण
- ✓ प्रामाण्य मूल्य पर सामग्री मूल्य का निर्धारण
- ✓ कल्पित मूल्य पर सामग्री मूल्य का निर्धारण

**वास्तविक मूल्य के आधार पर सामग्री का निर्गमन:-** इस विधि में सामग्री के निर्गमन मूल्य का निर्धारण विभिन्न तिथियों को खरीदी गई सामग्री के क्रम मूल्य के आधार पर किया जाता है।

इसकी भी निम्न विधियाँ हैं:

#### पहले आना, पहले पाना (FIFO - First In, First Out)

- इस विधि में पहले आने वाले माल का पहले निर्गमन किया जाता है तथा बाद में आने वाले माल का बाद में
- इसमें किसी एक ही दिन निर्गमित सामग्री का मूल्य भी अलग-अलग हो सकता है।
- यह विधि वहाँ ही उपयोगी है जहाँ पर सामग्री की प्रति इकाई लागत ज्यादा हो तथा निर्गमन की दर कम हो।

#### अंतिम आना, पहले जाना (LIFO - Last In, First Out)

- इस विधि में यह माना जाता है कि सबसे बाद में प्राप्त होने वाली सामग्री का निर्गमन प्रथम किया गया है।
- स्टोर में सामग्री को प्राप्ति मूल्य के आधार पर नहीं रखा जाता, केवल निर्गमन के उद्देश्य से यह माना जाता है कि अंतिम सामग्री को पहले दिया गया है।
- यह विधि तब उपयुक्त है जब मूल्य तेजी से बढ़ रहे हैं।

#### सर्वोच्च आना, पहले जाना (HIFO)

- इस विधि में स्टॉक में उपलब्ध विभिन्न मूल्यों वाली सामग्री में से जिसका मूल्य सर्वाधिक हो, उसको पहले निर्गमन किया जाता है।
- इस विधि में स्टॉक का मूल्य न्यूनतम आता है। इसका प्रयोग कम किया जाता है, यह व्यावहारिक नहीं है।

#### आधार स्टॉक मूल्य विधि:

- यह FIFO का संशोधन है। इसमें प्रत्येक प्रकार की सामग्री का एक न्यूनतम स्टॉक रखा जाता है, उसके बाद निर्गमन किया जाता है।
- इसका दोष है कि इसमें closing stock का मूल्यांकन बहुत पुराने मूल्यों पर होता है।

#### विशिष्ट मूल्य विधि:

- इस विधि में सामग्री का निर्गमन उसी मूल्य पर किया जाता है जिस मूल्य पर इन्हें स्थापित किया गया था (कम + कम व्यय) था एक से अधिक उपकार्य होने पर यह विधि व्यावहारिक नहीं होती।

#### औसत मूल्य के आधार पर सामग्री का निर्गमन:

- जब मूल्यों में आकस्मिक उतार-चढ़ाव होता है तो यह विधि काम में ली जा सकती है।
- इसमें मूल्य उच्चावचन का प्रभाव किसी एक उपकार्य पर नहीं पड़ता।

Simple Average Method	Weighted Average Method
इस विधि में मात्रा का ध्यान नहीं रखा जाता, केवल मूल्यों का योग कर, मूल्यों की संख्या से भाग देकर औसत मूल्य ज्ञात किया जाता है।	इसमें सामग्री के मूल्य व मात्रा दोनों का ध्यान रखा जाता है। इसकी विशेषता है कि सामग्री का मूल्यांकन प्रत्येक नई प्राप्ति के बाद किया जाता है।

#### कल्पित मूल्यों पर सामग्री का निर्गमन

- (i) बाजार मूल्य अथवा बाद में आना पहले जाना विधि (NIFO)
- (ii) स्थानापन्न मूल्य विधि (Replacement Price)

सामान्य सामग्री हानि की राशि से तो उपकार्य की लागत बढ़ा दी जाती है:

असामान्य सामग्री हानि की राशि को P&L खाते में Transfer कर दिया जाता है क्योंकि इससे उपकार्य की लागत को नहीं बढ़ाया जाता।

## सामग्री वापसी का लेखा (Accounting of Material Returned):

सामग्री वापसी दो प्रकार से हो सकती है:

(1) भण्डार द्वारा पूर्तिकर्ता को सामग्री वापस लौटाना: जब भण्डार को प्राप्त सामग्री किसी कारण से पूर्तिकर्ता को वापस लौटा दी जाती है तो इसका लेखा *Material Issued Column* में करना होगा।

पूर्तिकर्ता को लौटाई गई सामग्री का मूल्य निर्धारण यह मानते हुए किया जाएगा कि इस दिन अगर किसी उपकार्य को सामग्री जारी की जाती, तो उसका मूल्य क्या होगा – उसी मूल्य पर।

(2) उपकार्य द्वारा भण्डार को सामग्री वापसी:

जब भण्डार को किसी उपकार्य पर बची हुई सामग्री वापस आती है तो इसका लेखा *Material Receipts Column* में किया जाता है। इसका लेखा किस मूल्य पर किया जाए, इसके संबंध में निम्न नियम हैं:

अगर यह ज्ञात हो कि सामग्री मूल रूप से किस उपकार्य को किस मूल्य पर निर्धारित की गई थी, तो उसी मूल्य पर वापसी का लेखा करेंगे।

## Unit-III

### इकाई अथवा उत्पादन लागत निर्धारण विधि

लागत लेखांकन का प्रमुख उद्देश्य किसी उत्पाद या सेवा की कुल लागत तथा प्रति इकाई लागत का निर्धारण करना होता है, ताकि उत्पादन तथा विक्रय संबंधी निर्णय लिया जा सके। लागत ज्ञात करने की विभिन्न विधियों में *Unit Costing* भी एक विधि है, जो सामान्यतः उन संस्थाओं में काम में ली जाती है।

“उत्पादन की इकाइयाँ समान प्रकार की होती हैं तथा उत्पादन कार्य निरंतर चलता रहता है, जैसे – ईट के भट्टे, कोयले की खान, सीमेंट उत्पादन, चमड़ा उद्योग, दुग्ध उद्योग, सूत उद्योग, आटा मील, कपड़ा उद्योग, कागज़ उद्योग, चाय उत्पादन आदि।”

### इकाई लागत निर्धारण विधि के उद्देश्य:

1. कुल लागत तथा प्रति इकाई लागत ज्ञात करना
2. कुल लागत का विभिन्न भागों में विश्लेषण करना
3. तुलनात्मक अध्ययन करना
4. लागत के प्रत्येक तत्व का कुल लागत से प्रतिशत ज्ञात करना
5. विक्रय मूल्य तथा लाभ का निर्धारण करना
6. निविदा मूल्य (Tender Price) ज्ञात करना

### Elements of Cost (लागत के तत्व)

- Material
  - ✓ Direct Material
  - ✓ Indirect Material
- Labour
  - ✓ Direct Labour
  - ✓ Indirect Labour
- Overheads
  - ✓ Direct Overheads
  - ✓ Indirect Overheads

### इकाई (Cost Unit) (लागत इकाई)

प्रत्येक उत्पादन की लागत इकाइयाँ अलग-अलग होती हैं, जिनमें विभाजन करके ही कुल लागत को प्रति इकाई में बाँटा जाता है।

जैसे:-

उद्योग	लागत इकाई
सूत उत्पादन	क्विंटल
खान उद्योग	प्रति टन
कागज़	प्रति रिम (500)

ईट उद्योग	प्रति 1000 ईटें
आय	प्रति क्विंटल
चीनी उत्पादन	प्रति क्विंटल
शराब	प्रति बोतल
दुग्ध उत्पादन	प्रति लीटर
स्टील	प्रति टन
कोयला उत्पादन	प्रति टन
चाय	प्रति क्विंटल
सीमेंट	प्रति क्विंटल

### इकाई लागत ज्ञात करने की विधियाँ:-

- (1) लागत पत्रक (Cost Sheet)
  - (2) लागत विवरण (Statement of Cost)
  - (3) उत्पादन खाता (Production Account)
- (सबको बनाने का एक समान अंतर है, केवल प्रारूप का ही)

### लागत पत्र:

“लागत पत्र किसी वस्तु के उत्पादन से संबंधित स्थायी प्रकार के व्ययों का एक ऐसा विश्लेषणात्मक विवरण है जो उत्पादन की कुल लागत, प्रति इकाई लागत एवं उत्पादन मात्रा की जानकारी देता है।”

### Format of Detailed Cost Sheet

(Cost Sheet of Ltd for the period of 2019-20)

### Detailed Cost Sheet

**Company Name:** Ltd

**Period:** 2019-20

**Output:** ... Units

Particulars	Total Cost (₹)	Cost Per Unit (₹)
<b>Direct Material Consumed</b>		
Opening Stock of Material	XX	
Add: Purchase of Material	XX	
Add: Carriage Inward	XX	
Add: Custom Duty and Octroi	XX	
Add: Dock Charges	XX	
Add: Freight Inward	XX	
Add: Primary Packing Material	XX	
<b>Less: Closing Stock of Material</b>	(XX)	
<b>Total Material</b>	XXX	XXX
<b>Add: Direct Wages</b>	XXX	
<b>Add: Royalty on Production</b>	XXX	
<b>Add: Other Direct Costs</b>	XXX	XX
<b>= Prime Cost</b>	XXX	

<b>Add: Factory Overheads</b>		
Factory Rent, Rate, and Insurance	XX	
Factory Lighting	XX	
Factory Supervision	XX	
Drawing Office Salary	XX	
Motive Power	XX	
Fuels, Oil	XX	
Grease, Water, etc.	XX	
Steam (भाप)	XX	
Welfare Expenses	XX	
Laboratory Expenses	XX	
Depreciation of Plants & Machinery	XX	
Depreciation of Factory Building	XX	
Repairs & Maintenance of Factory	XX	
Indirect Wages	XX	
Technical Director's Fees	XX	
Haulage	XX	
Loose Tools Written Off	XX	
Material Storage Expenses	XX	
Material Handling Expenses	XX	
Factory Stationery	XX	
Works Manager Salary	XX	
Works Clerical Staff Salary	XX	
Supervisor Salary	XX	
Store Keeper Salary	XX	
Service Department Expenses	XX	
Factory Cleaning	XX	
All Other Factory Expenses	XX	
<b>Add: Opening Stock of Work-in-Progress (W-I-P)</b>	XXX	
<b>Less: Closing Stock of Work-in-Progress</b>	(XX)	

<b>Factory Cost / Works Cost</b>	XXX	XXX
<b>Add: Office Overheads</b>		
Office Rent, Rate and Taxes	XX	
Staff Salary	XX	
Office Lighting	XX	
Office Cleaning	XX	
Printing & Stationery	XX	
Postage and Telegram	XX	
Office Conveyance	XX	
Depreciation of Office Building & Furniture	XX	
All Expenses of Directors	XX	

Depreciation of Office Equipment	XX	
Office Repairs	XX	
Sundry Expenses	XX	
General Expenses	XX	
Establishment Expenses	XX	
Legal Expenses	XX	
Audit Fees	XX	
Bank Charges	XX	
<b>= Total Office Overheads</b>	<b>XXX</b>	
<b>Add: Opening Stock of Finished Goods</b>	<b>XXX</b>	
<b>Less: Closing Stock of Finished Goods</b>	<b>(XX)</b>	
<b>= Cost of Goods Sold</b>	<b>XXX</b>	

<b>Add: Selling Overheads</b>		
Advertisement	XX	
Showroom Expenses	XX	
Travelling Expenses	XX	
Commission on Sales	XX	
Salesman Salaries	XX	
Expenses on Market Research	XX	
Bad Debts	XX	
Cost of Tenders	XX	
Samples & Gifts	XX	
<b>Add: Distribution Overheads</b>		
Counting House Salaries	XX	
Service Expenses (Distribution)	XX	
Packing Expenses	XX	
Loading & Carriage Charges	XX	
Rent of Warehouse (Finished Goods)	XX	
Insurance & Lighting of Warehouse	XX	
Expenses of Delivery Van	XX	
Salaries of Packing Department	XX	
Collection Charges	XX	
Cost of Mailing Literature	XX	
Branch Expenses	XX	
<b>= Total Cost of Sales</b>	<b>XXX</b>	<b>XXX</b>
<b>Add: Profit</b>	<b>XX</b>	
<b>= Sales</b>	<b>XXXX</b>	<b>XXXX</b>

चालू कार्य या अर्द्ध-निर्मित माल का समायोजन:

चालू कार्य से आशय उन इकाइयों से है, जिन पर कार्य अभी तक पूर्ण नहीं हुआ है, परंतु प्रारंभ किया जा चुका है।

इससे संबंधित दो विचारधाराएं हैं-

- **प्रथम:** अर्द्ध-निर्मित माल को मर्दों के अनुसार विभाजित करके अलग-अलग रखना।
- **द्वितीय:** अर्द्ध-निर्मित माल का समायोजन कारखाना लागत के साथ किया जाना। क्योंकि चालू कार्य का मूल्यांकन कारखाना लागत पर ही किया जाना चाहिए।

**Note:** द्वितीय विचारधारा ज्यादा उचित है।

**तैयार माल के स्टॉक का समायोजन:**

→ तैयार माल के स्टॉक का समायोजन **Cost of production** के बाद किया जाता है।

**जैसे:**

Factory Cost	XXX
Add: Administrative Overheads	XXX
Cost of Production	XXX
Add: Opening Stock of Finished Goods	XXX
Less: Closing Stock of Finished Goods	XXX
Production Cost of Goods Sold	XXX

अगर तैयार माल के प्रारम्भिक स्टॉक तथा अन्तिम स्टॉक की केवल मात्रा दी गई है, मूल्य नहीं दिया गया हो, तो उनके मूल्य का निर्धारण वर्तमान परिस्थितियों में निर्मित माल की प्रति इकाई के आधार पर किया जायेगा।

**Treatment of Scrap:-**

- अवशेष सामग्री अथवा श्रम का लेखा:- सामग्री का वह भाग जो उत्पादन प्रक्रिया के अन्त में अपने आप ही बच जाता है, जिस पर आगे प्रक्रिया करके उत्पादन न किया जा सके।
- यदि यह अवशेष कच्ची सामग्री का है, तो इसे बेचकर प्राप्त राशि को उत्पादन लागत में कमी कर देंगे।
- यदि यह अवशेष उत्पादन प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न हुआ है, तो इसको बेचकर प्राप्त राशि से कारखाना लागत को कम कर देंगे।
- सामग्री के अवशेष से असामान्य हानि होने पर, लागत लाभ-हानि खाते में स्थानान्तरित कर देंगे।
- विक्रय मूल्य या निविदा मूल्य का निर्धारण :- उत्पादक को अनेक बार अपने उत्पाद का विक्रय आदेश प्राप्त करने के लिए क्रेता को अनुमानित मूल्य बनाना पड़ता है, जिसका निर्धारण लागत में लाभ जोड़कर किया जाता है।

**इसके निर्धारण की निम्न प्रक्रिया है:**

1. पूर्व अवधि में किए गए उत्पाद की कुल लागत ज्ञात करना तथा प्रति इकाई लागत ज्ञात करना।
2. गत अवधि की लागतों के आधार पर विभिन्न उपरिव्ययों की अवशोषण दर ज्ञात की जाती है।

**जैसे:**

✓ कारखाना उपरिव्यय का प्रत्यक्ष श्रम पर प्रतिशत, कार्यालय उपरिव्यय का कारखाना लागत पर प्रतिशत।

3. इसके बाद विक्रय मूल्य पर या लागत पर लाभ की दर ज्ञात की जाती है।
4. पूर्व अवधि की लागतों में वर्तमान स्थिति के अनुसार होने वाले समायोजन करना।

**लाभ की राशि ज्ञात करना (जब प्रतिशत दर कुल लागत पर हो):**

$$\text{Profit on Cost} = \text{Total Cost} \times \frac{\text{Percentage of Profit}}{100}$$
$$\text{Profit on Sales} = \text{Total Cost} \times \frac{\text{Percentage of Profit}}{100 - \% \text{ of Profit}}$$

**उत्पादन खाता (Production Account)**

जब इकाई लागत से संबंधित सूचनाओं को खाता प्रारूप में रखा जाता है, तो इसे *उत्पादन खाता* कहते हैं। इसमें दोहरा लेखा विधि के सभी सिद्धांतों का पालन करते हुए लागत ज्ञात की जाती है।

**निर्माणी एवं व्यापारिक खाता (Manufacturing and Trading Account)**

यह खाता वित्तीय पुस्तकों में निर्माण लागत को प्रकट करने के उद्देश्य से बनाया जाता है।

निर्माण खाता बनाने के प्रमुख सिद्धांत वही हैं जो *उत्पादन खाता* बनाने के हैं, लेकिन उत्पादन खाता प्रत्येक उत्पाद के लिए अलग-अलग बनाये जाते हैं, जबकि निर्माण खाता सभी उत्पादों के एक ही बनाये जाते हैं।

## उपकार्य एवं ठेका लागत निर्धारण विधि :- (Job and Contract Costing Method):-

लागत लेखांकन में प्रत्येक उत्पाद की लागत ज्ञात करने का कार्य किया जाता है, परन्तु यह उत्पाद की प्रकृति के अनुसार तय किया जाता है कि लागत कैसे ज्ञात करें। लागत निर्धारण की समस्त विधियों को दो भागों में बाँटा गया है:

- प्रक्रिया लागत (Process Costing) (Next Unit में)
- कार्यानुसार लागत (Job Costing)

### **कार्यानुसार लागत (Job Costing) :-**

इस विधि का प्रयोग तब किया जाता है जब किसी विशेष निर्देश के साथ किसी विशिष्ट उपकार्य को सम्पन्न करना हो, जिसमें मूल लागत प्रत्येक उपकार्य की अलग होती है तथा उपरिव्ययों को अलग-अलग अवशोषित किया जाता है।

**जैसे:-** मरम्मत, प्रिंटिंग प्रेस, भवन, पुल निर्माण, सड़क निर्माण आदि।

उपकार्य लागत निर्धारण विधि में प्रत्येक उपकार्य के लिए पृथक रूप से लागत का संग्रह किया जाता है।

प्रत्येक उपकार्य अपना पृथक अस्तित्व रखता है।

### **उपकार्य लागत लेखांकन की विशेषताएँ**

- इसमें वस्तु का उत्पादन ग्राहकों के क्रय आदेशों की पूर्ति करने के लिए किया जाता है, ना कि माल का स्टॉक करने के लिए।
- प्रत्येक उपकार्य अपनी पृथक विशेषता रखता है तथा विशेष व्यवहार की मांग करता है।
- प्रत्येक उपकार्य की लागत तथा लाभदायकता अलग-अलग ज्ञात की जाती है।
- इस विधि का प्रमुख उद्देश्य न्यूनतम लागत पर तथा समय पर कार्य को सम्पन्न करना है।
- वस्तु का निर्माण कारखाने में या निजी स्थान पर किया जा सकता है।
- प्रबंधक भावी उपकार्यों की लागत के सम्बन्ध में निर्णय ले सकते हैं।
- इस विधि का प्रमुख दोष है कि इसका प्रयोग Standard Costing विधि को लागू किए बिना नहीं किया जा सकता।

### **उपकार्य लागत लेखांकन की कार्यविधि (Procedure of Job Costing)**

1. **उपकार्य आदेश संख्या :-** प्रत्येक आदेश प्राप्त उपकार्य के लिए एक *order* संख्या निर्धारित की जाती है ताकि उपकार्य की पहचान बनी रहे।
2. **उत्पादन आदेश तैयार करना :-** योजना विभाग द्वारा ग्राहक के आदेशानुसार उत्पादन आदेश तैयार किया जाता है।
3. **आवश्यकता सामग्री का अनुमान तथा सामग्री बिल बनाना।**
4. **उपकार्य लागत पत्रक या लागत पत्र : (Job Cost Card / Cost Sheet)**

यह पत्रक *Job Costing* विधि का हृदय होता है। इस पत्रक में संबंधित उपकार्य में लगने वाले सभी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष व्ययों का लेखा इसी में किया जाता है। प्रत्येक उपकार्य के लिए अलग-अलग पत्रक रखे जाते हैं।

**गर्ग मेप्ल की उपकार्य-146 के संबंध में निम्न लागत अभिलेख है (उपकार्य लागत ज्ञात करो):**

- **Material:** ₹4500
- **Wages:**
  - ✓ Department X = 180 hours × ₹2 per hour
  - ✓ Department Y = 120 hours × ₹3 per hour
  - ✓ Department Y = 60 hours × ₹3 per hour

**तीनों विभागों के कुल परिवर्तनीय तथा स्थिर व्यय निम्न हैं:**

- Department X Labour = ₹20000 for 5000 Hours
- Department X Labour = ₹8000 for 3000 Hours
- Department Z = ₹2000 for 2000 Direct Hours
- Fixed Overheads = ₹2000
- कुल लागत तथा विक्रय पर 25% लाभ जोड़ते हुए विक्रय मूल्य ज्ञात करो।

**Ans:** Calculation of Total cost or selling price of order No. 146

Particulars	Amount
<b>Material</b>	4500
<b>Wages</b>	
Dep. X: 180 @ ₹2	= 360
Dep. Y: 120 @ ₹3	= 360
Dep. Z: 60 @ ₹5	= 300
	<b>1020</b>
<b>Prime Cost</b>	<b>5520</b>

### Variable Overheads

[WN-1]

Dep. X: 180 @ ₹4 = 720

Dep. X: 120 @ ₹2 = 240

Dep. X: 60 @ ₹1 = 60

**1020**

### Fixed Cost (WN-2)

360 hours @ ₹2/hour = 720

**Total Cost | 7260 |**

**Add: Profit @ 25% of selling price**

(WN-3)

$$= ₹7260 \times \frac{25}{75} = 2420$$

**Selling Price = ₹9680**

**WN-1** – प्रश्न में हमें Variable Cost मानक रूप में दे रखी है, वहाँ से हम अवशोषण दर ज्ञात करेंगे।

जैसे –

$$\text{Dep. X} \frac{2000 ₹}{5000 \text{ hour}} = ₹4 \text{ per Hour}$$

इसी प्रकार समस्त Dep. की दर ज्ञात करेंगे, फिर Order No. 146 के Labour Hours से गुणा करेंगे।

**WN-2** – स्थायी लागत की अवशोषण दर निम्न प्रकार ज्ञात होगी:

$$\frac{\text{Fixed Cost}}{\text{Direct Hour}} \text{ (प्रति)}$$

$$\frac{1000}{2000} = ₹2 \text{ per Hour 50 order no. 146}$$

$$= 360 \text{ Hours @ ₹2} = ₹720$$

### ठेका लागत निर्धारण विधि :- (Contract Costing Method)

ठेका लागत निर्धारण विधि वहाँ अपनायी जाती है जहाँ किसी निश्चित कार्य को निश्चित मूल्य पर सम्पन्न करने का उत्तरदायित्व किसी व्यक्ति ने लिया हो।

जैसे:-

भवन निर्माण, सड़क निर्माण,

पूल निर्माण आदि।

जिस अवधि में सम्पूर्ण ठेका पूरा होता है, उसे ठेके की सावधी अवधि कहा जाता है। यह एक वित्तीय वर्ष हो सकती है या एक से ज्यादा वित्तीय वर्ष हो सकती है।

इस विधि में प्रत्येक ठेके की लागत अलग-अलग ज्ञात की जाती है तथा उस पर होने वाले लाभ तथा हानि का विश्लेषण किया जाता है।

ठेका ठेकेदार तथा ठेकेदाता के मध्य एक अनुबंध होता है, जो निश्चित कार्य को निश्चित समय में तथा निश्चित शर्तों के अनुसार पूरा करने का वचन देता है।